Vol 5 Issue 7 April 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 7 | April - 2016

Review Of Research

आचार्य कामन्दक प्रणीत कामन्दकीय नीतिसार में निहित विद्यार्थी की संकल्पना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

ललित कुमार पोशवाल[1] , मुरलीधर मिश्रा[2]
[1]शोधार्थी, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान .
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान .

ललित कुमार पोशवाल

सारांश –

कामन्दकीय नीतिसार में निहित विद्यार्थी की संकल्पना को समझने हेतु कामन्दकीय नीतिसार में निहित विद्यार्थी संकल्पना का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। दार्शनिक अनुसंधान विधि किये गये इस अध्ययन में कामन्दकीय नीतिसार में निहित विद्यार्थी संकल्पना से सम्बन्धित विचारों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए विषयवस्तु विश्लेषण की प्रविधियों प्रयोग मुख्यतः किया गया। कामन्दक द्वारा विरचित कामन्दकीय नीतिसार प्राथमिक स्रोत तथा कामन्दकीय नीतिसार से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के व्यक्तिगत प्रलेख, सार्वजनिक प्रलेख, व्यक्तिगत शोधकर्ताओं के प्रकाशन या प्रतिवेदन, पत्र-पत्रिकाएँ तथा साहित्य द्वितीयक स्रोत रहे हैं। निष्कर्ष रूप में यह पाया गया है कि कामन्दकीय नीतिसार के अनुसार विद्यार्थी को विचार, वाणी और कार्य की पवित्रता के साथ परिश्रम कर अध्ययवसायी बनना चाहिए। गुरु के प्रति विश्वास, नम्रता, विनय और श्रद्धा रखनी चाहिए। मन, वाणी और कर्म से ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। मन और इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना चाहिए। प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिए। सत्य बोलना चाहिए। चोरी नहीं करनी चाहिए। प्रतिदिन गुरु को प्रणाम करना चाहिए तथा गुरु की सेवा करनी चाहिए।

प्रयुक्त शब्दावली: कामन्दकीय नीतिसार, विद्यार्थी संकल्पना, विश्लेषणात्मक अध्ययन, विषयवस्तु विश्लेषण की प्रविधियाँ.

1.सम्प्रत्ययात्मक पीठिका– कामन्दकीय नीतिसार में धर्म सापेक्ष राज्य के स्वरूप को उपस्थापित करने के उद्देश्य से राजधर्म को प्रमुख नीति के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। कामन्दक ने अर्थशास्त्र को अपनी रचना का आधार बनाते हुए व्यावहारिक विषयों को अधिक महत्त्व के कारण कामन्दकीय नीतिसार की पर्याप्त उपयोगिता है। पाण्डेय के अनुसार कौटिल्य के विचारों में संशोधन के उद्देश्य से कामन्दक ने नीतिसार की रचना की। वस्तुतः कामन्दकीय नीतिसार शोध की दृष्टि से उपेक्षित रहा है। अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने अपनी कृति ''हिन्दु राज्य शास्त्र'' में पुंडरीक के एक महत्त्वपूर्ण तथ्य का उल्लेख किया है, जिसके अनुसार बौद्धों के भय से हिन्दू लोग अनेक संस्कृत ग्रन्थ लेकर बाली द्वीप पर चले गये थे तथा उन्हें पुनः भारत लौट आने का अवसर प्राप्त नहीं पाया था। उन पुस्तकों में कामन्दकीय नीतिसार भी था। इस कारण इस ग्रन्थ पर शैक्षिक शोध कार्य नहीं हुआ है। कामन्दकीय नीतिसार में विद्यार्थी सम्बन्धी जो विचार हैं वे भारतीय शिक्षा और भारतीय समाज के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि हो सकते हैं।

साहित्यिक निधियों पर हुए शोध प्रमाणों के अध्ययन से यह पता चलता है कि वर्तमान समस्याओं/चिन्ताओं के समाधान हेतु सूत्र साहित्यिक राशि में प्राप्त हो सकते हैं। शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थी का क्या स्थान होना चाहिए? विद्यार्थी का आचार-विचार कैसा होना चाहिए? विद्यार्थी के क्या कर्तव्य होने चाहिए? विद्यार्थी के क्या-क्या अधिकार होने चाहिए? इत्यादि प्रश्नों के उत्तर प्राप्त

करने के लिए कतिपय शोध अध्ययन हुए हैं। इन अध्ययनों में चौहान, वी. पी. एस. (१९८१) ने 'स्वामी दयानन्द का शैक्षिक दर्शन' के अध्ययन में पाया कि शिक्षा की प्राचीन गुरुकुल प्रणाली जिसमें विद्यार्थी के ब्रह्मचर्य की एक आवश्यक शर्त होती थी को लागू करने पर बल दिया। दबे, दया (१९९८) ने 'वैदिक साहित्य में पर्यावरण शिक्षा' के अध्ययन में पाया कि शिक्षा में विद्यार्थी का महत्वपूर्ण स्थान है। जिससे वह श्रेष्ठ मानव बनता है। दुबे, आर. एन. (२००१) ने 'स्वामी दयानन्द सरस्वती व विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का अध्ययन' में पाया कि प्रकृति के सानिध्य में बालक की शिक्षा होनी चाहिए। स्वामी दयानन्द ने आत्मिक उन्नति के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करने पर बल दिया। बैरवा, गायत्री (२००९) के अनुसार स्मृतियों में शिष्य के कर्त्तव्य बताये गए हैं कि शिष्य के लिए अभ्यास और तप के अतिरिक्त संयम भी रखना आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य है ज्ञान प्राप्त करना और वह तभी प्राप्त कर सकता है जबकि उसमें संयम और तपस्या के गुण हो। कुमावत, छगनलाल (२०१०) के अनुसार स्वामी विवेकानन्द ने गुरुकुल प्रथा में गुरु शिष्य सम्बन्धों की प्रगाढ़ता बल दिया है। वर्मा, सुधा (२०११) ने प्रमुख भारतीय शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में औचित्य के अध्ययन में यह पाया कि विद्यार्थी में नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, व्यावसायिक इत्यादि मूल्यों को विकसित व आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिए। यादव, महेश चन्द (२०१२) ने 'नालन्दा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालयों की शैक्षिक व्यवस्था का अध्ययन (सम्पूर्ण शैक्षिक गुणवत्ता के सन्दर्भ में)' में पाया कि गुरू के समान ही शिष्य भी अपने धर्म का पालन करते थे। विद्यार्थी माता-पिता और गुरू को देवताओं के समान आदर प्रदान करते हुए उनके आदेशों का पालन करना अपना कर्त्तव्य समझते थे। गुरू और छात्र जीवन ''सादा जीवन उच्च विचार'' पर आधारित था।

जैन, सपना (२०१३) ने आचार्य विद्यासागर के शैक्षिक विचार का अध्ययन में पाया कि विद्यार्थी विवेकशील, कर्त्तव्यनिष्ट विचारों का होना चाहिए। सिंगवाल, सावित्री (२०१३) ने 'श्रीमद्भागवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन' में पाया कि शिष्य अपने गुरू पर पूर्ण विश्वास और श्रद्धा रखता है, गुरू और शिष्य के बीच पिता-पुत्र के समान आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध हैं जो युगों-युगों तक शिक्षा और मानव समाज के लिए मार्ग दर्शक बने रहेंगे। जैन, वीना देवी (२०१३) ने 'आधुनिक तेरापंथ जैन सम्प्रदाय के साहित्य में निहित शैक्षिक विचारधारा का उनकी वर्तमान में प्रासंगिकता के सन्दर्भ में गवेषणात्मक अध्ययन' में पाया कि जिस व्यक्ति में जिज्ञासा ग्रहणशीलता है वही विद्यार्थी हैं। दया, संयम सात्विक भय और विनय, विद्यार्थी के लिए आवश्यक हैं। जैन साहित्य में गुरु और शिष्य का सम्बन्ध वात्सल्य और समर्पण का बतलाया है। चरित्रवान अध्यापकों से ही चरित्रवान शिष्यों का निर्माण हो सकता है। अध्यापक व शिष्य के बीच श्रद्धा का भाव होना चाहिए। जैन, सुषमा (२०१३) ने 'जैन दर्शन में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता एवं उपादेयता- एक अध्ययन' में पाया कि जैन दर्शन में अहिंसा, चोरी न करना, झूठ न बोलना, इन्द्रियों को वश में रखना, तृष्णा का परित्याग करना, मन, वचन एवं कर्म से शुद्ध रहना इत्यादि बातों पर बल दिया गया है। जो विद्यार्थियों में नैतिकता का विकास करने में सहायक सिद्ध होंगे। विद्यार्थियों में शिक्षा द्वारा मानवता के गुणों का विकास कर समाज में बढ़ते वृद्धाश्रमों पर रोक लगाई जा जा सकती है। महावीर स्वामी के विचारों द्वारा विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मनोवृति का विकास करने में अत्यन्त सहायक है।

सम्प्रत्ययात्मक पृष्ठभूमि एवं उपर्युक्त सम्बद्ध साहित्य की समीक्षा के आधार पर कामन्दकीय नीतिसार में निहित विद्यार्थी की संकल्पना को समझने हेतु शोधकर्ता द्वय ने कामन्दकीय नीतिसार में निहित विद्यार्थी संकल्पना का विश्लेषणात्मक अध्ययन का निश्चय किया।

2.शोध उद्देश्य– सम्प्रत्ययात्मक पीठिका के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन के अग्रांकित उद्देश्य निर्धारित किये गये-
कामन्दकीय नीतिसार में निहित विद्यार्थी की संकल्पना का अध्ययन करना।
कामन्दकीय नीतिसार में निहित विद्यार्थी की संकल्पना सम्बन्धी विचारों की व्याख्या करना।

3.संक्रियात्मक परिभाषीकरण– प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली के मुख्य शब्दों का परिभाषीकरण इस प्रकार है-
अ. कामन्दकीय नीतिसार : यहाँ कामन्दकीय नीतिसार से आशय आचार्य कामन्दक द्वारा प्रणीत नीतिविषयक ग्रन्थ से है।
ब. विद्यार्थी की संकल्पना : विद्यार्थी का अर्थ होता है- ''विद्या+अर्थी'' अर्थात् जो विद्या का इच्छुक हो, विद्या को ग्रहण करने वाला अथवा विद्या को चाहने वाला। विद्या का अर्थ ज्ञान, शिक्षा और विज्ञान से होता है, जो इस ज्ञान को ग्रहण करने हेतु प्रयासरत है, वही विद्यार्थी है। कामन्दकीय नीतिसार में प्रकट जिस भाव, विचार, स्थिति एवं अपेक्षाओं में विद्यार्थी के लिए निहित अर्थ का प्रतिबिम्बन हुआ है, उसको विद्यार्थी के विषय में विचार अथवा संकल्पना के रूप में व्याख्यायित किया गया है।

4.शोध विधि– प्रस्तुत शोध अध्ययन प्रमुख रूप से दार्शनिक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत कामन्दकीय नीतिसार में निहित विद्यार्थी संकल्पना से सम्बन्धित विचारों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए विषयवस्तु-विश्लेषण की प्रविधियों प्रयोग किया गया।

5.प्रदत्त स्रोत– प्रस्तुत शोध अध्ययन में कामन्दक द्वारा विरचित कामन्दकीय नीतिसार प्राथमिक स्रोत तथा कामन्दकीय नीतिसार से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के व्यक्तिगत प्रलेख, सार्वजनिक प्रलेख, व्यक्तिगत शोधकर्ताओं के प्रकाशन या प्रतिवेदन, पत्र-पत्रिकाएँ तथा साहित्य द्वितीयक स्रोत रहे हैं।

6.कामन्दकीय नीतिसार में निहित विद्यार्थी संकल्पना– कामन्दकीय नीतिसार में विद्यार्थी के विषय में स्पष्ट रूप से वर्णन किया है लेकिन कहीं-कहीं विद्यार्थी संकल्पना को स्पष्ट करने के लिए इसमें वर्णित विचारों का तार्किक विश्लेषण करना पड़ा है। कामन्दकीय नीतिसार में चारों वर्ण और आश्रमों का विस्तृत उल्लेख किया है। सम्भवतः सभी आश्रमों का समय २५-२५ वर्ष का रहा होगा।

नीतिसार में गुरु-गृह अर्थात् गुरुकुल पद्धति का वर्णन किया है। जिसमें विद्यार्थी जीवन के विशेष काल तक माता-पिता से दूर गुरु के घर या आश्रमों में शिक्षा प्राप्त करता था। यथा-

शास्त्राय गुरुसंयोगः शास्त्र विनयवृद्धये।।

अर्थात् विनय वृद्धि के लिए शास्त्रों का अध्ययन करना आवश्यक माना गया है, वहीं शास्त्र अध्ययन के लिए गुरु का संयोग या श्रेष्ठ गुरु की प्राप्ति अत्यावश्यक है। विद्यार्थी गुरुगृह में ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ शिक्षा प्राप्त करता था। जहाँ विनय के साथ-साथ आचरण की शुद्धता को प्रमुखता दी जाती थी। ब्रह्मचारियों के निम्न प्रमुख कार्य बताये हैं-

गुरु वासोऽग्निशुश्रूषा स्वाध्यायो व्रतधारणम्।
त्रिकालस्नायिता भैक्ष्यं गुरौ प्राणान्तिकीस्थितिः।।
तद्भावे गुरुसुते तथा स ब्रह्मचारिणि।
कामतोवाऽऽश्रमान्यत्वं स धर्म्मो ब्रह्मचारिणः।।

अर्थात् विद्यार्थी विद्याध्ययन के लिए गुरुकुल या गुरुगृह में निवास करता था। शिक्षा कार्य का प्रारम्भ प्रातःकाल से होता था। विद्यार्थी अपनी दैनिक क्रियाओं से निवृत होकर हवन आदि में भाग लेता था। विद्यार्थी को दिन में तीन समय अनिवार्य रूप से स्नान करने का उल्लेख किया है।

कामन्दक ने इस बात पर बल दिया है कि विद्यार्थी को वेदों का अध्ययन अनिवार्य है। शिष्य को तपस्वी जीवन व्यतीत करना, व्रत धारण करते हुए उपनिषदों सहित सम्पूर्ण वेदों का अध्ययन करना अनिवार्य है। विद्यार्थी को स्वाध्याय करना अनिवार्य है। स्वाध्याय से मनुष्य का जीवन सुखी और उपयोगी बनता है। बुद्धि का विकास होता है और शास्त्रों के निरन्तर अध्ययन से उसका जीवन तेजस्वी होता है।

कामन्दकीय नीतिसार में विद्यार्थी के लिए भिक्षावृत्ति का विधान बतलाया है। विद्यार्थी भिक्षा मांगकर लाये तथा प्राप्त वस्तु को गुरु के सम्मुख उपस्थित करे और गुरु द्वारा प्रदत्त अंश को ही ग्रहण करे। इससे विद्यार्थी के मन में निहित अहंकार को समाप्त करना प्रमुख उद्देश्य रहा होगा। साथ ही विद्यार्थी को यह अनुभूति होती होगी कि समाज की सहायता के बिना मेरी शिक्षा पूर्ण नहीं हो सकती। कामन्दक के समय भिक्षा-वृत्ति को अनैतिक नहीं माना जाता था। प्रत्येक गृहस्थ छात्र को भिक्षा अवश्य देता था। क्योंकि वह जानता था कि उसका पुत्र भी कहीं भिक्षा मांग रहा होगा।

कामन्दक ने विनय को नीति का मूल बतलाया है। भिक्षा मांग कर पेट पालना विद्यार्थी का परम धर्म माना है। भिक्षा का नियम विद्यार्थी के लिए बनाने का कारण यह माना जा सकता है कि भिक्षा मांगने से जीवन में विनय की शिक्षा मिलती है उसका अहंकार नष्ट हो जाता है। विद्यार्थी को यह अनुभूति होती थी कि समाज की सेवा, सहायता और सहानुभूति से ही ज्ञान प्राप्ति व जीविकोपार्जन हो सकता है। विद्यार्थी के लिए करणीय कार्य निम्न हैं-

स मेखली जटी दण्डी मुण्डी वा गुरुसंश्रयः।
आविद्याग्रहणाद्रच्छेत्कामतोवाऽऽश्रमान्त रम्।।

अर्थात् कामन्दक ने चारों आश्रमों का तथा उनके कार्यों का उल्लेख किया है। विद्यार्थी जीवन में पर्दापण करने के बाद विद्यार्थी मेखला धारण करता था। सम्भवतः यह मेखला वर्ण के अनुसार धारण की जाती होगी। जिसमें ब्राह्मण मूंज की, क्षत्रिय तांत की और वैश्य ऊन की मेखला धारण करते होंगे।

कामन्दकीय नीतिसार में विद्यार्थी के सिर के बालों की तीन विधियों का निर्देश प्राप्त होता है-

१.जटा बांधकर रखना।
२.सिर को मुड़ा कर रखना।
३.शिखा मात्र रखना।

यहाँ स्पष्ट है कि विद्यार्थी को सामान्य जीवन जीते हुए विलासता पूर्ण जीवनशैली से दूर रहना चाहिए। इसके पश्चात् उल्लेख किया है कि प्रत्येक विद्यार्थी अपने गुरु को देव तुल्य मानते हुए उनकी सेवा करे-

देवतावद्गु रूजनमात्मवच्च सुहृज्जनम्।।
गुरुस्तुविद्याधिगमायसेव्यते श्रुता च विद्यामतयेमहात्मनाम्।।

गुरुजनों को देव के समान और सत्पुरूषों को आत्मा के समान मानकर उनकी पूजा करनी चाहिए। विद्यार्थी अपने गुरु का सदा सम्मान करता था और विद्या प्राप्ति के लिए गुरु सेवा उसका प्रमुख कर्त्तव्य था क्योंकि विद्या की प्राप्ति उन देवतुल्य महात्माओं की मति के कारण होती है। गुरुगृह में विद्यार्थी के अन्य कर्तव्य निम्न है।

अहिंसा सूनृता वाणी सत्यं शौचं दया क्षमा।।

हिंसा न करना, सत्य और प्रिय वाणी का प्रयोग करना, सत्यनिष्ठा, पवित्रता, दया, क्षमा इत्यादि। अतः स्पष्ट है कि विद्यार्थी को किसी भी व्यक्ति या जीव जन्तु पर हिंसा न करने का विधान किया है। विद्यार्थी गुरुगृह में निवास करते हुए किसी को भी शारीरिक और मानसिक रूप से कष्ट न देवें। विद्यार्थी को सभी परिस्थितियों में मृदु व सत्य वचन बोलने चाहिए, विद्यार्थी अपने जीवन में ऐसे नियमों का व्यवहार करता था, जिससे उसके आचरण में पवित्रता बनी रहे। साथ ही प्राणियों पर दया और क्षमा इत्यादि भी विद्यार्थी के आवश्यक कार्य बताये गये हैं।

विद्यार्थी अवस्था में शिष्य को मन, वाणी और कर्म से ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। अखण्ड ब्रह्मचर्य पालन करने से वासनाओं को वश में कर लेने का शुभ फल प्राप्त होता है। इसके लिए कामन्दकीय नीतिसार में मन और इन्द्रिय निग्रह को विद्यार्थी के लिए अनिवार्य बताया है–

विषयामिषलोभेन मनः प्रेरयतीन्द्रियम्।
तन्निरुन्ध्यात्प्रयत्नेन जिते तस्मिन् जितेन्द्रियः।।

विषयों के उपभोग की लालसा से मन इन्द्रियों को प्रेरित करता है, इस कारण यत्न पूर्वक मन पर नियत्रण रखना चाहिए। मन विजय से ही इन्द्रिय विजय का मार्ग प्रशस्त होता है। अर्थात् इन्द्रिय-निग्रह करने पर विद्यार्थी का शरीर और आचरण शुद्ध रहता है। वर्तमान समय में देखा जाये तो हमारे समाज के मनुष्यों में अनेक दुर्गुणों का विकास हुआ है जिसमें महिलाओं के साथ छेड़-छाड़, बलात्कार इत्यादि प्रमुख हैं। यदि हमारे विद्यार्थी अपने शरीर और आचरण को शुद्ध रखते हुए मन और इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखेंगे तो जीवन की बहुत-सी समस्याओं और बीमारियों को फैलने से रोका जा सकता है। ऐसी ही एक बीमारी एड्स की है। जिसको विद्यार्थी इन्द्रिय नियंत्रण द्वारा फैलने से रोक सकते हैं। इसके साथ-साथ कामन्दकीय नीतिसार में अनुजीवी वर्ग के अग्रांकित अनेक निषिद्ध कार्यों का निर्देश प्राप्त होता है। यथा–

परस्थानासनं कौय्यमौद्धत्यं मत्सरं त्यजेत्।
विगृह्य कथञ्चैव न कुर्य्याज्ज्यायसा सह।।
विप्रलम्भञ्च मायाञ्च दम्भं स्तेयञ्च वर्जयेत्।
उच्चैः प्रहसनं कासंष्ठीवनं कुत्सनं तथा।
जृम्भणं गात्रभंगञ्च पर्वास्फोटञ्च वर्जयेत्।।
प्रवीणो•पि हि मेधावि वर्जयेदभिमानिताम्।।

किसी के कथन को ग्रहण कर अपने से अधिक बड़ों से वाद-विवाद न करें। उपालम्भ के वचन, माया, अहंकार और चोरी न करें। इसके साथ ही ऊँचे स्वर में हँसना, बहुत खाँसना, खंकारना, निन्दा करना, जम्भाई लेना, उँगली चटकाना इत्यादि बातें राज सभा में नहीं होनी चाहिए। अनुजीवी जिस प्रकार राजा का सेवक होता है उसी प्रकार विद्यार्थी भी गुरु का सेवक होता है। अतः कामन्दकीय नीतिसार के इन विचारों का तार्किक विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि विद्यार्थी को दूसरों का स्थान और आसन ग्रहण नहीं करना चाहिए। विद्यार्थी को क्रूरता और मत्सर का त्याग करने के साथ ही अपने से बड़ों से कभी विवाद नहीं करना चाहिए साथ ही उपालम्भ और अहंकार पूर्ण वचन भी नहीं बोलने चाहिए। चोरी करना, हास-परिहास करना, ऊँचे स्वर में बोलना, खांसना, उँगुली चटकाना, प्रवीणता और बुद्धि पर अभिमान इत्यादि बातें विद्यार्थी के लिए वर्जित हैं। उक्त सभी बातें इस ओर संकेत करती हैं कि विद्यार्थी को ऐसा कोई व्यवहार और आचरण विद्यालय में नहीं करना चाहिए जो विद्यालय की गरीमा और गम्भीरता को क्षति पहुचाये। वर्तमान में उक्त आचरण के अतिरिक्त मोबाईल फोन आदि को भी अनुकरणीय आचरण की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। अतः विद्यालय में इस पर भी प्रतिबन्ध लगाया जाना आवश्यक है। विद्यार्थी को कक्षा-कक्ष में अनावश्यक विवाद नहीं करना चाहिए।

कामन्दकीय नीतिसार में वर्णित उक्त विचारों के आधार पर विद्यार्थी के निम्न कर्त्तव्य निर्धारित किये जा सकते हैं–

- विचार, वाणी और कार्य की पवित्रता के साथ परिश्रम कर अध्ययवसायी बने।
- गुरु के प्रति विश्वास, नम्रता, विनय और श्रद्धा रखे।
- मन, वाणी और कर्म से ब्रह्मचर्य का पालन करे।
- मन और इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखे।
- प्रतिदिन स्वाध्याय करे।
- सत्य बोले और चोरी नहीं करे।
- किसी अन्य के स्थान या आसन पर न बैठे।
- प्रतिदिन गुरु को नमन प्रणाम करे तथा गुरु की सेवा करे।

7.शैक्षिक निहितार्थ– वर्तमान समय में रोजगार के क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण विद्यार्थी विद्याध्ययन हेतु विद्यालय अथवा शिक्षण संस्थाओं की अपेक्षा कोचिंग संस्थाओं को महत्त्व दे रहा है। ऐसी स्थिति में वह ज्ञान के उस स्वरूप को ग्रहण नहीं कर पा रहा है जो उसके जीवन एवं भावी पीढ़ियों हेतु अत्यावश्यक है। जीवन लक्ष्यों का स्पष्ट निर्धारण न हो पाने के कारण उसका तात्कालिक उद्देश्य मात्र उपाधि प्राप्त करना रह गया है। कामन्दकीय नीतिसार की शिक्षा के आधार पर विद्यार्थी को उचित मागदर्शन प्रदान किया जा सकता है क्योंकि यह समय उसके व्यक्तित्व निर्माण का समय है। विद्यार्थी इस समय का जितना उचित प्रकार से उपयोग करेगा उसका जीवन उतना ही अधिक उन्नत बन सकेगा। इसके लिए विद्यार्थी को ध्यान रखना चाहिए कि वे जागरूकता पूर्वक अपने जीवन को सद्गुणों के अर्जन में लगायें जिससे उनका जीवन उन्नत बन सके। नीतिसार की शिक्षा के आधार पर विद्यार्थी में गुरु के प्रति श्रद्धा, विश्वास, नम्रता और विनय का विकास किया जा सकता है। अहंकार तथा घमण्ड को समाप्त किया जा सकता है साथ ही विद्यार्थी को विलासता पूर्ण जीवन शैली से दूर किया जा सकता है। विद्यार्थी शिक्षा को मात्र अर्थोपार्जन का साधन न मानकर शिक्षा के सम्यक् अर्थ को अपने जीवन में अपनाकर मन और इन्द्रियों पर नियन्त्रण कर तथा मन, वाणी और कर्म से ब्रह्मचर्य का पालन कर संयमित जीवन जीना सीख सकेंगे। अपने जीवन को संस्कारित कर उसका उपयोग विद्या ग्रहण करने में कर सकेंगे। इस प्रकार कामन्दकीय नीतिसार के आधार पर विद्यार्थी में उच्च गुणों का विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

१.बैरवा, गायत्री (२००६) : 'प्रसिद्धेषु अष्टादशस्मृतिग्रन्थेषु उपलभ्यमानानां शैक्षिकतत्त्वानां तुलनात्मक अध्ययनम्, शोध-प्रबन्ध, ज. र.र. संस्कृत वि.वि. जयपुर।
२.कार्टर, वी. गुड (१९७२) : इसेन्सियल्स ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च, न्यूयार्क, मेरेडिथ कोर्पोरेशन।
३.चौहान, वी.पी.एस. (१९८१) : स्वामी दयानन्द का शैक्षिक दर्शन, शोध-प्रबन्ध, मेरठ वि.वि., मेरठ।
४.दवे, दया (१९९८) : वैदिक साहित्य में पर्यावरण शिक्षा, शोध प्रबन्ध शिक्षा, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
५.दुबे, आर. एन. (२००१) : स्वामी दयानन्द सरस्वती व विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का अध्ययन, शोध प्रबन्ध शिक्षा, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद।
६.गुर्जर, बृजेन्द सिंह (२००२) : संस्कृत नीतिशास्त्रीय ग्रन्थों के परिप्रेक्ष्य में कामन्दकीय नीतिसार का तुलनात्मक अध्ययन, शोध प्रबन्ध संस्कृत, राजस्थान वि.वि., जयपुर।
७.जैन, बीना देवी (२०१३) : आधुनिक तेरापंथ जैन सम्प्रदाय के साहित्य में निहित शैक्षिक विचारधारा का उनकी वर्तमान में प्रासंगिकता के सन्दर्भ में गवेषणात्मक अध्ययन, शोध प्रबन्ध शिक्षा, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली।
८.जैन, सपना (२०१३) : आचार्य विद्यासागर के शैक्षिक विचार, शोध प्रबन्ध शिक्षा, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली।
९.जैन, सुषमा (२०१३) : 'जैन दर्शन में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता एवं उपादेयता, शोध प्रबन्ध, वनस्थली विद्यापीठ।
१०.झा, फुलेश्वर (२००६) : कौटिल्य अर्थशास्त्र एवं कामन्दकीय नीतिसार का तुलनात्मक अध्ययन, कला प्रकाशन, वाराणसी।
११.शर्मा, आर.ए. (१९८६) : शिक्षा अनुसन्धान इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
१२.कुमावत, छगनलाल (२०१०) : स्वामी विवेकानन्द एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन, शोध प्रबन्ध शिक्षा, राजस्थान वि.वि., जयपुर।
१३.मिश्र, ज्वाला प्रसाद (संवत २००९) : कामन्दकीय नीतिसार, खेमराज श्री कृष्ण दास, श्री बैकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई-४।
१४.मिश्रा, श्याम बिहारी (२००६) : प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की वर्तमान में उपादेयता : एक समीक्षात्मक अध्ययन शोध प्रबन्ध शिक्षा, सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि.वि., वाराणसी।
१५.मित्तल, एम. एल. (२००३) : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
१६.चंदकमलपाण्डेय, श्याम लाल (१९६४) : भारतीय राजशास्त्र के प्रणेता, हिन्दी समिति सूचना विभाग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
१७.सिंह, रेवत (२०११) : जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक चिंतन की समसामयिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता, शोध प्रबन्ध राजस्थान वि.वि.।
१८.सिंगवाल, सावित्री (२०१३) : 'श्रीमद्भागवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिपेक्ष्य में अध्ययन', शोध प्रबन्ध, वनस्थली विद्यापीठ।
१९.वाजपेयी, अम्बिका प्रसाद (१९५७) : हिन्दु राजशास्त्र, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
२०.वर्मा, सुधा (२०११) : प्रमुख भारतीय शिक्षाशास्त्रीयों के विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में औचित्य का अध्ययन, शोध प्रबन्ध शिक्षा, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
२१.यादव, महेश चन्द (२०१२) : 'नालन्दा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालयों की शैक्षिक व्यवस्था का अध्ययन (सम्पूर्ण शैक्षिक गुणवत्ता के सन्दर्भ में) अध्ययन', शोध प्रबन्ध, राजस्थान वि.वि., जयपुर।

१.कामन्दकीय नीतिसार, १/५९.
२.कामन्दकीय नीतिसार, २/२२-२३.
३.कामन्दकीय नीतिसार, २/२४.
४.कामन्दकीय नीतिसार, ३/३१.
५.कामन्दकीय नीतिसार, १/६६.

६.कामन्दकीय नीतिसार, २/३२.
७.कामन्दकीय नीतिसार, १/२७.
८.कामन्दकीय नीतिसार, ५/१८,१९,२३,२६.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org